ISSN 2349 - 137X
UGC CARE-listed, Peer Reviewed Journal

प्रतिध्वनि कला
संस्कृति की

शोध लोक

वर्ष–10, अंक – 19, 2024
(जनवरी–जून)

ISSN 2349-137X
UGC CARE-Listed Peer Reviewed

अनहद लोक

(प्रतिध्वनि कला एवं संस्कृति की)

वर्ष-10, अंक-19, 2024
(जनवरी - जून)
(अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

सम्पादक
डॉ॰ मधु रानी शुक्ला

सम्पादक मण्डल
डॉ॰ राजश्री रामकृष्ण, डॉ॰ मनीष कुमार मिश्रा,
डॉ॰ धनंजय चोपड़ा, डॉ॰ ज्योति सिन्हा

सह सम्पादक
सुश्री शाम्भवी शुक्ला

व्यंजना
आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी
109 डी/4, अबुबकरपुर, प्रीतम नगर, सुलेम सरांय
प्रयागराज - 211011

29. Cultural, Ecological and Feminist Manifestations in *Sanja Geet* — *Miti Sharma*, *Dr. B. K. Anjana* — 168

30. Understanding Garia as Signs of Puberty in the Borok Culture of Tripura — *Rati Mohan Tripura*, *Prof. Somdev Banik* — 173

31. किन्नौर जनपद के त्यौहार एवं उत्सवों में देवी-देवताओं का महात्म्य — *दीपमाला*, *डॉ. प्रीति सिंह* — 178

सामायिकी

32. Art and Theatre as Catalysts of Change : Tracing the Journey of Modernization in Indian Society — *Dr. Y. Chakradhara Singh*, *Mr. Priyan.K.M*, *Ms. Kalitoli K Chishi* — 185

33. फ्यूज़न और शास्त्रीय संगीत — *डॉ. वेणु वनिता* — 191

34. राग समय सिद्धांत का नव-आधुनिक उपयोजन — *डॉ. गिरीश प्रेमलाल चंद्रिकापुरे* — 198

35. A Scenario of the Evolution of Hindustani Music in Karnataka — *Dr. Shivakumar M* — 204

36. भारतीय शास्त्रीय संगीत के शैक्षणिक पक्ष के संवर्धन में शैक्षिक संचार संकाय की भूमिका का अवलोकन — *डॉ॰ गुरप्रीत सिंह* — 212

37. Values of Nature in Indian Classical Music : An Analytical Study — *Dr. Alok Acharjee* — 219

38. Film as a Site of Memory: An Analysis of Rajeev Ravi's *Thuramukham* — *Muhammed Rafeek K. P.*, *Dr. M. Richard Robert Raa* — 223

39. Shattered Barriers : Unveiling the Glass Ceiling in Local Media — *Neha Sinha*, *Dr. Santosh Kumar* — 227

40. आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना एवं स्वास्थ्य संचार : उत्तर प्रदेश और झारखंड राज्य के विशेष संदर्भ में — *विवेक कुमार*, *शशांक कुमार द्विवेदी* — 234

41. Superstition and Science : An Analysis of the Film 'Bhool Bhulaiyaa' — *Jyotsana Sinha* — 241

42. Exploring the multidimensional landscape of North Indian Classical Music : An analysis of its Relevant Research areas and Methodology — *Nibedita Shyam*, *Prof. Dr. Sangeeta Pandit* — 246

43. Analysing the Role of Songs in Bollywood Horror Films — *Virginia Kashyap*, *Dr. Prachand Nayan Piraji* — 254

किन्नौर जनपद के त्यौहार एवं उत्सवों में देवी-देवताओं का महात्म्य

दीपमाला
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
हि. प्र. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

डॉ. प्रीति सिंह
शोध निर्देशिका
हि. प्र. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

सार संक्षेप :

बहुतांश मेले और त्यौहार अवसित हो जाएंगे, यद्यपि इनमें से देवी-देवताओं की भूमिका को हटा दिया जाए। कोई न कोई धार्मिक व ऐतिहासिक प्रेरणा इनके पीछे विद्यमान होती है। देवताओं का मिलाप परंपरागत लोक नृत्य सहित इन त्योहारों और मेलों का प्रमुख चित्तग्राही परिदृश्य होता है। मेले और त्यौहार क्षेत्रीय जनमानस के लोकजीवन का अभिन्न अवयव होते हैं। किन्नौर के लोकनृत्य और संगीत इन्ही मेलों व त्यौहारों के द्वारा शब्दायमान होते हैं। इनके अभाव में जीवन नीरसता से भर जाएगा। त्योहारों और मेलों को जितना अधिक महत्व इस क्षेत्र में दिया जाता है,अन्यत्र ही दिया जाता होगा।

बीज शब्द :

त्यौहार, मेले, देवी-देवता, पुष्प, आस्था, संस्कृति

किन्नौर के मेले और त्यौहार आम जनमानस को अपनी ओर सहर्ष ही आकृष्ट करते हैं। कुसुमरहित इस क्षेत्र का कोई भी मेला व त्योहार नहीं होता है। इनकी अपरिहार्यता हर उत्सव में होती है। हिमाच्छादित होने पर काष्ठ पुष्प पर्णीत कर, पुष्प के अभाव को पूर्ण किया जाता है।बारह माह किन्नौर जनपद में नानाविध मेलों व त्योहारों का आयोजन होता है। अपनी अद्वितीय विशिष्टता लिए प्रत्येक त्यौहार व मेले इस क्षेत्र के असाधारण परिपाटी व संस्कृति को प्रस्तुत करते हैं। सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्य को दर्शाते, इस भू-खंड के इन त्योहारों व मेंलो में हमारी संस्कृति की अनूठी छटा चाक्षुष होती हैं। देवी-देवताओं से ही इन मेंलों एवं त्योहारों की परंपरा है।

देवी-देवताओं से संबंधित प्रमुख त्यौहार एवं मेले इस प्रकार है :

1. **साजो :** किन्नौर में आयोजित होने वाले नाना प्रकार के त्योहारों में से एक त्यौहार है साजो। यह त्यौहार वर्ष के आरंभ जनवरी में मनाया जाता है। परम्परागत पद्धति अनुसार इन त्योहारों का आयोजन होता है। लोहड़ी पर्व को इस क्षेत्र में 'साजो' अभिधा प्राप्त है। माघ माह में यह त्यौहार हर्षोल्लास से मनाया जाता है। प्रायः किन्नौर क्षेत्र में इस पर्व के उपरांत ही नववर्ष का प्रारंभ माना जाता है। इस प्रदेश के समस्त देवी-देवता इस माह के प्रथम दिवस इंद्रलोक प्रस्थान करते हैं। भूलोक पर पन्द्रह दिनों के उपरांत जब इन का आगमन होता है, तो नाना प्रकार के भोज्य व्यंजन बनाकर क्षेत्र जनमानस द्वारा पूजन-अर्चन होता है।इस त्यौहार को देवताओं की विदाई का पर्व भी कहा जा सकता है।